B.A (Hons) Part 1
Indian Philosophy

प्रश्न - सांख्य दर्शन के कारणता - सिद्धान्त या सत्कार्यवाद या 'कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में वर्तमान रहता है' की समीक्षात्मक व्याख्या करें ?

उत्तर

प्रायः प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने अपने तत्वशास्त्रीय विचार के अन्तर्गत कारणता सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। सांख्य दर्शन में भी कारणता सिद्धान्त का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वभावतः प्रश्न उठता है कि कोई भी कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में वर्तमान रहता है या नहीं ? प्राचीन भारतीय दर्शन में उपरोक्त प्रश्न का उत्तर दो प्रकार से दिया गया है। भारतीय दर्शन का कुछ सम्प्रदाय इसका निषेधात्मक उत्तर देते हुए स्वीकार करते हैं कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में वर्तमान नहीं रहता है। इस विचार को 'असत्कार्यवाद' कहा जाता है और इसे मुख्य रूप से न्याय-वैशेषिक दर्शन तथा बौद्ध दर्शन के हीनयान सम्प्रदाय स्वीकार करता है। लेकिन कुछ अन्य सम्प्रदाय उपरोक्त प्रश्न का भावात्मक उत्तर देते हैं। जिसके कार्य अपने उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान रहता है। इस विचार को सत्कार्यवाद कहा जाता है। इसे मुख्यतः सांख्य दर्शन, वेदान्त दर्शन तथा बौद्ध दर्शन का महायान सम्प्रदाय स्वीकार करता है।

सत्कार्यवाद के दो भेद माने जाते हैं-

① परिणामवाद - परिणामवाद के अनुसार कार्य-कारण का वास्तविक रूपान्तरण है। इसे सांख्य दर्शन तथा रामानुज स्वीकार करते हैं। लेकिन सांख्य और रामानुज के विचार में इस बात को लेकर अन्तर पाया जाता है कि सांख्य सम्पूर्ण विश्व को प्रकृति का रूपान्तरण मानते हैं। यही कारण है कि सांख्य के विचार को प्रकृति परिणामवाद तथा रामानुज के विचार को ब्रह्म परिणामवाद की संज्ञा दी जाती है।

Scanned with CamScanner